जल एक अनमोल संसाधन और जनसंचार एक विश्लेषण

डॉ0 वेद प्रकश
पी–एच0डी0 (जनसंचार एवं पत्रकारिता)
Email - bpldraj@gmail.com

साराशं

जैसा कि विदित है जल की उपयोगिता के विषय में सभी जानते है। जल यानी जीवन। आज जल के इस्तेमाल और उसके संरक्षण के लिए आम आदमी को समाचार पत्र, पत्रिकाओं, रेडियों, दूरदर्शन, आदि के माध्यम से जानकारी करायी जा रही है। इन तमाम जनसंचार माध्यमों द्वारा लोग पानी की महत्ता उसमें विद्यमान, लवणता, आर्सेनिक, नाइट्रेट, लोहा, आदि को जान एवं उसके प्रयोग के विषय में समझ रहे है। जल के विषय में आम जन मानस को जागरूक करनें में जनसंचार कार्यक्रमों की भूमिका सराहनीय है। लेकिन इसके लिए सरकार और जनसंचार कार्यक्रम निर्माता, निर्देशको को जल को बचाने और उसके संरक्षण के प्रति सचेत होना पड़ेगा। 'मन की बात' के माध्यम से आम जनता तक पानी को बचाने की मुहीम एक प्रकार से यह बहुत ही सराहनीय प्रयास है। आज हम भारतवासीयों को इस बात से सचेत रहने की आवश्यकता है कि हम सब मिल कर तालाब, पोखरा, गड़ही, कुआं, झील, नहर आदि में जल को इस तरह से संचय करे, बचाये जिससे सूखे की मार झेल रही धरती और जीव की रक्षा हो सके और भारतीय संविधान की जो मूल प्रस्तावना है जैसे ''हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण, प्रभुत्व, सम्पन्न,..... का सपना साकार हो सके।

मुख्य शब्द – जल, जनसंचार, जीवन, आम आदमी, संरक्षण, बचाना

परिचय

यह सभी जानते है कि जल हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी है क्योंकि जल के अभाव में जीवन की कल्पना करना असम्भव है। जीवन में जल की बड़ी आवश्यकता होती है चाहे वह जल तालाब, पोखरों, झील, नदी नहर कही का भी हो लेकिन प्राणी के जीवन में स्वच्छ जल का रहना अति आवश्यक है। मनुष्य के दैनिक क्रिया कलाप के साथ विभिन्न कार्यो के लिए कृषि, मतस्यपालन, पशुपालन, जल–विद्युत उत्पादन, रेलों का चलना, नौका और स्टीमर संचानल जल के बिना नहीं हो सकता। कृषि और वनस्पति का तो जल एक प्रमुख आधार है। कारखानों में भी जल की अति आवश्यकता होती है। लोहा–इस्पात, चमड़ा, चीनी, खाद और कागज आदि उद्योगों में जल की अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है। अतः जल हमारे लिए बहुत ही अनमोल और महत्वपूर्ण संसाधन है। जिस देश में पानी की कमी होती है, वे मरुभूमी में बदल जाते है। वहाँ का जीवन कष्टमय हो जाता है। इसी लिये वहाँ बहुत कम जनसंख्या पायी जाती है। जल संसाधन में हमारा देश बड़ा ही समृद्ध है जो विश्व में तीसरा स्थान है। हमारे देश में जल उपलब्धता कें दृष्टि से दो भागो में बाटा जा सकता है।[1]''

1–भूस्तरीय जल

2–भूगर्भीय या भूमिगत जल

भूस्तरीय जल–वर्षा के द्वारा पृथ्वी के धरातल पर गिरने वाले जल को और साथ ही वर्फ के पिघलने से नदियों को प्राप्त होने वाले जल को भूस्तरीय जल होता है। यह जल पृथ्वी के धरातल पर पाया जाता है। जो तालाबों और झीलों में स्थिर जल के रूप में और नदियों में बहते हुए जल के रूप में प्राप्त होता है। जैसा कि अनुमान है पूरे देश में वर्षा द्वारा लगभग 370 हजार करोड़ घन मीटर पानी प्राप्त होता है। इसमें लगभग 170 हजार करोड़ घन मीटर जल नदियों में बह कर पहुचतां है। इसमें से 56 हजार करोड़ घन मीटर जल ही सिचाई के काम में आ पाता है। और साथ ही घरेलू उपयोग, उद्योग–धन्धों में भी तो आता ही है। भूस्तरीय जल का उपयोग जल विद्युत उत्पादन में भी किया जाता है। शक्ति का यह एक प्रमुख साधन है। भूमिगत जल या भूगर्भीय जल–जैसा कि विदित है वर्षा का कुछ जल भूमि सोख लेती है। यह जल रिसकर भूमि के भीतर चिकनी मिटट्ी या अभेद चट्टानो के उपर इक्कठा हो जाता है। इस तरह भूमि के भीतर बड़े –बडे जलाशय बन जाते है। जा` बाद मे ंयही जल कुओं, पम्पिंग सेटो, नलकूपो और पाताल तोड़ कूओं के द्वारा हमे ं पानी पीने के लिए, सिंचाई और उद्योगा ` के संचालन हे तु मिलता है। भूमिगत जल का अधिक प्रयोग होने पर कुओं में जल कम हो जाता है या सूख जाता है। जिस वर्ष वर्षा कम होती है उस वर्ष कुओं का जल स्तर घट जाता है और कुछ कुएं तो गर्मियों में सुख जाते है । अतः भूमिगत जल का उपयोग बहुत ही सावधानी से करनी चाहिएं।

जल प्रयोग के उपाय–जल के सही इस्तेमाल हेतु सरकार द्वारा एक नीति निर्धारण किया गया है। जिन नदियो ं मे ंअपार जल है और जो बहकर नदियों ,समुद्र मे ंचला जाता है ऐ से जल का ` नहरो ं के माध्यम से दूर दराज के क्षे त्रो ं म ` ं भे जा जाता है जहाँ जल का अभाव रहता है। इससे वहाँ की जल पीने और सिचाई की समस्या दूर हो रही है ं साथ ही गांवो और शहरो मे ंशुद्ध पे यजल के अनेक संसाधन विकसित किये जा रहे है। इन संसाधनों को परियोजनाओं के नाम से जान सकते है। ये नदी घाटी योजनाएं जो अनेक उद्देश्यों की पूर्ती करते है। सिचाई, विद्युत गृहों का निर्माण, बाढ़ से सुरक्षा, जल मार्गो का विकास, अनेक कार्यो के लिए जल की सुविधा, भूमि के कटाव को रोकना, वृक्षारोपण, पशुओं के चारो की व्यवस्था और जंगल की सुरक्षा, मत्स्यपालन की सुविधा, आमोद–प्रमोद के साधनों का विकास, आदि। अन्य भारत की प्रमुख बहुद्देशीय परियोजनाएं भाखरा नांगल परियोजना, रिहन्द परियोजना, दामोदर घाटी परियोजना, हराकुंड परियोजना, चंबलघटी परियोजना, तुंगभद्रा परियोजना आदि इन बड़ी परियोजनाओ ंके अलावा बहुत सी छोटी सी छोटी परियो जनाये ं निर्मित की जा रही है। जिनके निर्माण में राज्य और केन्द्र सरकर दोनो अपने स्तर से जल प्रबन्धन के लिए कार्य कर रही है। जिससे जल को बचाया जा सके और उसका सही इस्तेमाल हो सके।

जल की विषेषताएँ–यह तापमान के वजह से बड़ ` विस्तार मे ं0–100० से0 तक द्रव्य अवस्था में रहता है। इसका विशिष्ट ताप उच्चतम है जिसके कारण यह बहुत धीरे–धीरे गर्म और ठंडा होता है और जलीय जीवो ं का ` ताप संक्षो भ का सामना नहीं करना पड़ता। जल वाष्पीककरण का गुप्त ताप बहु तऊँचा है अतः इसके वाष्पीकरण में बहुत उष्मा की आवश्यकता होती है। जल बहुत अच्छा विलायक है जिसके कारण यह पोषक पदार्थ का एक सही वाहक है। उच्च पृष्ट तनाव एवं संशक्ति के कारण यह आसानी से ऊँचाई तक चढ़ सकता है जिसे केशिका प्रभाव कहते है जिसके कारण पोषक पदार्थ पेड़ो की जड़ो से उनके तनो, पत्तों तक सावधानी से पहुच जाते है। यही नहीं जल

इस धरती पर एक ऐसा अनमोल धरोहर जो कह सकते है यह जल नहीं जीवन है।[2]''

जल बचाने के – जनसंचार माध्यमों के द्वारा देशवासियों को एक–एक बूँद पानी बचाने या जल संरक्षण के लिए समाज के सभी लोगों को आगे आने की देश के प्रधानमंत्री की अपील एक न्याय संगत है, किन्तु समाज मे ंऐ से लो गभी है जा` ज्यादा पानी नष्ट करते है ऐ से लो गा` के लिए इस पहल का पालन अच्छा है। हां यदि ऐसा होता है तो सचमुच इस देश का सौभग्य होगा और साथ ही जल का संचय, संरक्षित करना हम सबका दायित्व होना चाहिए।[3]''

जनसंचार या मीडिया के प्रयास से प्रशासनिक अधिकारियो ं में जागरूकता आयी जिससे वे पो खरों ,तालाबों ,नहरो ं आदि का` खुदवाने लग` जिससे बहुत से जलाशय जिन्दा होने लगे ।यदि मनुष्य की सोच कल्याणकारी औ रविकासन्मो खी हो ता` वह हर कार्य सकारात्मक दिशा मे ं करता है ।दैनिक जागरण मे ंछपे लेख के अनुसार अब तक विभिन्न राज्यो ं मे ंखोजे गय` तालाबों की संख्या निम्नवत है जो एक सकारात्मक प्रयास है।[4]''

जल संचय के लिए तलाश तालाबो ं की तालिका

क्रम	राज्य	अभिया न की परिधि में जीले	पुनर्जीवित/सुन्दरी कृत जलाशय	नये खोदे गये जलाशय	कुल जलाशय
1	उत्तर प्रदेश	75	4044	33052	7096
2	बिहार	38	272	25	297
3	झारखंड	24	298	06	304
4	हरियाणा	21	966	243	1209
5	पंजांब	22	95	06	101
6	हिमांचल	09	06	00	06
7	जम्मू काश्मीर	03	10	00	10
8	उत्तराखंड	13	12	00	12
9	पं0 बंगाल	04	07	00	07
10	दिल्ली	11	08	00	08
कुल		220	5718	3332	9050

तलाश तालाबो ं की इस कालम से पहल दैनिक जागरण समाचार पत्र वाले एक अभियान चला रह ` है जा` लगभग देश के अधिकतम राज्यों मे ंजारी है। जिससे लो गबहुत तेजी से तालाबो ं की खो जकर उसमे पानी को एकत्र करने की कोशिश कर रहे है। यह काम स्थानीय स्तर पर प्रशासन के द्वारा किया जा रहा है, जिसमे ं सफलता भी मिल रही है।[5]" केन्द्र सरकार के तरफ से प्रारम्भ की गयी प्रधानमंत्री ग्राम सिचाई योजना का लक्ष्य हर किसान का खेत सीचने के साथ प्रति बूं दअधिक फसल की व्यवस्था करना है। बजट मे ं सूक्ष्म सिचाईं जल संभरण विकास और प्रधानमंत्री कृषि सिचाई यो जना के लिए 5,300 करोड़ रुपये की राशि के आवंटन का प्रावधान किया गया है। पानी की समस्या के समाधान के लिए प्रधानमंत्री ग्राम सिचाई योजना कारगर सावित होगी जो जल को बचाने का श्रेष्ठ तरीका है।[6]" सिंचाई परियोजनाएं पानी की समस्या के लिए कारगर उपाय है। हर खेत तक पानी पहुचाने के लिए अगले पांच वर्षो में 86 हजार 500 करोड़ रूपये की आवश्यकता होगी। जो 23 सिंचाई योजानओं को पूरी करने के लिए जल संसाधन मंत्रालय का ` वर्ष 2016–17 के बजट मे ं 12 हजार करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है। साथ ही मनरेगा की तरह वर्षा पो षित क्षेत्रो ंमे ं पां चलाख फार्म तालाबो ं और कुओं को खादने की व्यवस्था की गयी है।[7]"

जल का महत्व इतना व्यापक है कि इसका प्रयोग जलमार्ग में भी किया जाना ज्यादा प्रभावशाली है। भारत मे ं जलमार्ग का उपयोग करने की अवधारणा नई नहीं है। ब्रिटिश शासन के समय भारत मे ंकई जलमागो ंको विकसित किया गया और कई नदियो ं का जलमार्ग के तौ रपर उपयो गजारी रखा गया जो जल की अनमोल धरोहर के रूप में एक मिशाल है।[8]" आज सूखे की वजह से लोगो के दिल दिमाग में एक बात तो बैठ गयी की यदि जल के महत्व को समझा नहीं गया तो वह दिन दूर नहीं जब लोगों के संकट को सामना करना पड़े गा। माननीय प्र धानमंत्री जी का प्रयास है कि जमीन ही नहीं दिल का सूखा भी मिटाने की पूरी कोशिश किया जाना चाहिए इसके लिए सभी राज्यों के मुख्मंत्रीयों को जनसंचार माध्यमो ं के द्वारा व लिखित बकायदा इसकी सूचना दी गयी कि वह अपने अपने राज्यो ं मे ंजल प्रबंधन की उचित व्यवस्था करे, ताकी जल की समस्या से निजात पाया जा सके। इसके लिए केन्द्र सरकार से राज्यो ं का` मदद भी की जा रही है। साथ ही दैनिक जागरण समाचार पत्र का अभियान भी चल रहा है जो एक सकारात्मक प्रयास है।[9]" प्रति बूंद ज्यादा उपज को आधार मानकर फसल को तैयार करना किसान की गुणवत्ता में समाहित हो रहा है। उन्नत तकनीक के माध्यम से जल का उपयोग एवं जल संचय में तरह–तरह के उपायों को अपनाकर जल को बचाना, मनुष्य को अपने स्वभाव में लाना होगा। तभी जल की उपयोगिता को समझा जा सकेगा। जल को बचाने के लिए तथा जल सम्बंधि विषयो के गहन विष्लेशण तथा अनुसंधान हेतु विशिष्ट बहुसंस्थागत, बहुबिषयक, तथा समयबद्ध कंसोर्शिया अनुसंधान प्लेटफार्म प्रारम्भ किया जा रहा है। जिससे पानी की संचित कर उसका सही तरीके उपयोग किया जा सके जो उच्च उत्पादकता, उच्च लाभ प्राप्त हो।[10]"

सुझाव

किसी भी सूचना को जन जन तक पहुंचाने जनसंचार माध्यमो ं की भू मिका महत्वपू र्ण होती है। सूखे से बचने के लिए हमे जल को व्यवस्थित करना होगा तभी हमारा जीवन हरा भरा रहेगा। पहले की तरह हमे ं उन सभी संसाधनों का` अपनाना पड़े गा जिसका हम बहुत पहले प्रयोग मे ंलाया करते थे ।जैसे तालाब, पोखरा, गड़ही, कुआं, झील, नहर आदि इसके अलावा देश ही नहीं अपितु विश्व के लोगों को अपनी आदतो ं मे ंभी सुधार लाने की जरूरत है। वह इसलिए की

हम जा` जल का प्रयो गअपने दैनिक जीवन मे ं करते है वह कितना और किस तरह से प्रयो गमे ंलाये इसका भी आम आदमी का` समझने की जरूरत है। आम आदमी में समाज के अमीर वर्ग से तो ज्यादा ही उम्मीद की जरूरत है क्योंकि वह अमीर वर्ग आम आदमी की तुलना में ज्यादा पानी प्रयोग में लाते है। अधिक संसाधनो की वजह से वे ज्यादा जल की खपत करते है जा` न्याय संगत नही ं है। जल अपनी विशे षताओ ंके कारण एक अद्वितीय संसाधन है ं जिसका मनुष्य अपने तरीके से प्रयो गमे ं लाता है। जरूरत है जल सही समय और सही तरीके से इस्तेमाल करने की ताकी बूँद–बूँद से घड़ा भरता है की कहावत सार्थक हो सके।

निष्कार्ष

जनसंचार माध्यम से ऐ से कार्यक्रमो ं को तैयार कर दिखाया जाय जिससे आम आदमी जल की गुणवत्ता, हानि–लाभ को जान सके। जल ही जीवन है जल के अभाव में जीवन की संभावना नहीं की जा सकती है। इस लिए जल का महत्व पृथ्वी की एक अनमोल धरोहर है। जिसको रक्षित, संचित करना हर मनुष्य का कर्तव्य है। आज जल को लेकर भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में जल को लेकर तरह–तरह के प्रबन्ध किये जा रह `है। ताकी लो गपानी का सही तरीके से इस्तेमाल करे ं और स्वंय के साथ पूरे जीव की रक्षा करें। जिस दिन आम आदमी जल के महत्व को जान जायेंगे उन दिन से पानी की समस्या कम होने लगेंगी। इसलिए हम मनुष्य को इस बात से सजग रहने की आवश्यकता है कि जल की महत्ता और उसके असतित्व को बचा कर रखा जाय इसी में हम सबकी भलाई है। जल को बचाने के हम सभी देशवासी को छोटी–छोटी बातों का ध्यान रखना होगा ताकी जल को व्यवस्थित किया जा सके।

संदर्भ

1. भूगोल विषय, पत्राचार शिक्षा संस्थान उत्तर प्रदेश सं0–1992, पृ0–10
2. द्विवेदी, धीप्रद,'' योजना'' मासिक पत्रिका, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मं ंत्रालय, नई दिल्ली दिसम्बर 2015, पृ0–66
3. दैनिक जागरण, समाचार पत्र 23 मई 2016 पृ0–1
4. दैनिक जागरण, समाचार पत्र 31 मई 2016 पृ0–1,9
5. दैनिक जागरण, समाचार पत्र 17 मई 2016 पृ0–9
6. चन्द्र, अखिलेश, ''कुरुक्षेत्र'' मासिक पत्रिका, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली जून 2015, पृ0–23
7. कुमार, आलोक, ''योजना'' मासिक पत्रिका, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मं ंत्रालय, नई दिल्ली मार्च 2016, पृ0–18
8. त्रिवेदी,विश्वपति, ''योजना'' मासिक पत्रिका, प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मं ंत्रालय, नई दिल्ली अप्रैल 2016, पृ0–21
9. दैनिक जागरण, समाचार पत्र 19 मई 2016 पृ0–1,9
10. तिवारी, मोनिका, ''कुरुक्षेत्र'' मासिक पत्रिका, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली सितम्बर 2015, पृ0–21
11. ''भारत 2011'' प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली

Copyright © 2016, Dr. Ved Prakash. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.